16793.

* श्रीः *

* विवेक शतक *

डाक्टर रमाकान्त मुझूमदार नैपाली परिशोधित

जिसे

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

मुम्बई

बुकसेलर अयोध्या जिला फैजाबाद ने

छपवाकर प्रकाशित किया.

केन्द्रीय शोध संस्थान
16793

CAWNPORE.
DIAMOND JUBILEE-PRESS,
1899.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ श्रीजानकीबल्लभोविजयतेराम ॥

॥ विवेक शतक ॥

* दोहा *

रामचरन दृष्टांत बिनु, मननलहै श्रुतिबोध ।
सहसबातकी बातयक, कहौ अर्थ सतसोध॥१॥
रामचरन श्रीराम को, बन्दत सब सुखपाइ ।
जैसेसींचै मूलको, डारपात हरिआइ ॥२॥
रामचरन प्रभु रूपबहु, रामभजे सब तुष्ट ।
जथाअसन मुखमेलिये, हाथपाव सबपुष्ट॥३॥
रामनाम सुमिरत सकल, नाममंत्रफलसोध ।
रामचरन जिमि रतनमें, सकलद्रव्यकेबोध॥४॥

रामरूप थिरह्वैलखत, ब्रह्मजीव लखिआय ।
रामचरन रबिलखतही, मंडलधाम सुभाय ॥५॥
रामचरन रविप्रभाते, रबिमूरति लखिजाय ।
तिमिनिजरूपप्रकासते, रामरूप दरसाय ॥६॥
रामचरन सतसंगबिनु, सन्तबिशुद्धन कोइ ।
जिमिजवाहिरी संगबिनु, नहिंजवाहिरीहोइ७॥
तनमनबचन मिलैनहीं, रहतसदा सतसंग ।
रामचरन थलएकमें, जथाछूट जलगंग ॥८॥
रामचरन सतसंगमें, परारहै नहिं जाइ ।
कबहुके जोसुरसरिबढ़ै, सोजललेइमिलाइ॥९॥
रामचरनसन्तनपरासि, तीनितापमिटिजाइ ।
जिमिमलयातरुपरसते,विषभुजंगसितलाइ १०
संतबचन हितसोंसुनत, कामक्रोधमद जाहिं ।
रामचरनहरिगर्जसुनि, जिमिगजयूथपराहिं ११

संतनके भोजन किये, हरिहिपरम सन्तोष ।
रामचरनजिमिगार्भिणी, खातिगरभसिसुपोष ॥
बिरति ज्ञान दाया छमा, रामरूपदृढ़ प्रेम ।
रामचरन परिसन्तसोइ, जिमिचातककोनेम १३
असनवसन अन्यासधर, बिधिपदआदिबिराग।
रामरूपजगमे लखहिं, रामचरनअनुराग १४॥
रामचरन असमन्त के, मिले सन्त ह्वै जाइ।
प्रबलअग्निमें परतज्यों, सकलअग्निपदपाइ॥
नदी मानतजि नइचली, मिली गंगमें गंग ।
रामचरनत्योंसिंधुहरि, मिलिअनूपसतसंग १६
रामचरन रहिसन्तमहँ, गहेनतासु निदेश ।
वेनुरहतश्रीखंडढिग, जिमिसुगंधनांहेलेश १७॥
खलौजाइसतसंग में, रहितकपट अभिमान ।
रामचरनजिमिमलयढिग,सबतरुमलयसमान॥

रामचरनरहि सन्तमहँ, मिलैनजो सतसंग।
नीरक्षीरढिगमिलेबिनु, जिमिनहोयपयरंग १९
रामचरन जोकपटकछु, सतगुरुमिलेहुनक्षेम।
लोहताम्रजिमिरहतमिलि, पारसजरीहुनहेम॥
जिमिजिमिसंगतिवोछकी, तिमि२सुभगुनजाइ
रामचरनपय फीकभौ, जिमि२नीरमिलाइ २१॥
यद्यपि सदगुनसबभरे, नीचसंग दुखदाइ।
रामचरन जिमि अहि मिले, चंदनहू करुआइ२२
नीच सङ्ग नहिं कीजिये, बाढ़त दुख के हेत।
रामचरनजिमिरबिशशी,केतुराहुदुखदेत॥२३॥
नीचहिदेनन कहियकछु, प्रीतिकरियनहिंरीस।
रामचरनजिमिकलीछली, चढ़उपरीछिनसीस॥
बचनप्रीतिवोछेह दिये, परमधर्म तन हान।
रामचरनाजिमिकैकेई, हरिविछोहहरीजान २५॥

रामचरन लघुसंगसो, कछुमहत्वघटि जाहि ।
सुरसरिजसगंगोत्तरी, तसमहात्मइहँ नाहि २६
बड़महत्वको लहतहै, नीचऊँच के संग ।
रामचरनजिमिगंगमिलि, कर्मनासाभइगंग २७
रामचरनं जबसुद्ध हिय, सतगुरुबचनसोहाइ ।
यथास्वातिजलसीपमणि,अहिमुखविषहोइजाइ
रामचरन सतगुरुकहै, सभामृदुल पविकूर ।
स्वातिवृष्टिसबतरुनजिमि,केदहिफूलेकपूर२९॥
जबसतगुरु नीकोकहै, तब साधुता सलोन ।
रामचरन जिमिखोटखर, खुलेकसोटीसोन३०॥
नयनज्ञान बैरागजेहि. भक्तिमुकुर दुतिनाम ।
रामचरन रबिगुरुबिना, मूरातिलखेनराम३१॥
रामचरन बकता सुभग, ज्ञानाबिराग बिहीन ।
खनत २ गिरिअर्धाजिमि, मानिकशिलानचीन॥

रामचरनपढ़िमुनिसमुझि, तजेउनविषयवजाइ
जिमिबाजीगिर बांसुरी बिषधरलेइबोलाइ३३॥
राम चरनकह प्रभु सतो, बिषे कर्म होइजाइ
लगेनतजेविचारजिमि,नभजलसरदहिपाइ ३४
रामचरन ज्यौं बिषय.कृतसंत जानि के आप
बढ़त हजारनएकते, जिमि तीरथकेपाप ३५॥
जिमि २मनबिषयातजे,तिमि२हरिदिसिलाग
रामचरन जिमि पाछपग, उठेपरेतबआग ३६
जिमि २ मनबिषयालगै, तिमि२हरिदिसिफेर।
रामचरन जिमिटिकतमग, तिमि२होतअबेर॥
जै स्वासा हरिने विमुष, तै स्वासा जमजात।
रामचरनजै पदचलत, तै पग राहसिरात ३८॥
जसजस रामहिसुमिरिये,तसतसहियप्रभुआय
रामचरनजिमिरसहिरस, भोजनकरत अघाय॥

रामचरन जेहितत्वजो इंद्रिन्ह सोइ सुखधारि।
जीव इंद्रिनमेरमेउ,जिमिविभिचारिनिनारि४०
रामचरन बिनु मनमरे. इन्द्री होय न खीस।
जबरावनकेसिरकटेउ,तबहिगिरेउदशशीश ४१
राम चरनजिमि रूपनिज,लेहतोमनमरिजाइ।
सिंहअजासंगचिन्हिनिज,तबतेहिपतिजुतखाइ
राम चरनलागहिजबहिं,मिटहिलाजजगनेह।
जिमितियामिलिपतिकुलभई, छुटेउमातुकुलगेह
राम हेतु बहुबेषरचि, तजेउ न जगव्यवहार।
रामचरनजिमिब्याह बिनु, बनिताकरतिसिंगार
जबलगि जीवनसुखी कहँ,जबलगिइन्द्रीजाल।
रामचरन बहुनारिबस,जिमियकपुरुषबेहाल४५
बिनुसर्बांग उपासना, मिलुन राम ढिग बास।
रामचरनजिमिब्याहबिनु. तियासुतैकेहिपास॥

रामचरन जसमानहित, लाइरहेउ जगहाट।
हियधरकपटकपाटदै,प्रभुआवहि केहिबाट४७॥
रामचरनजगजानि कै, तजे सर्प जिमि खाल।
अमलहोइजिवदाष्टितब, हरिमगचलतअडोल॥
रामचरन सतगुर बचन, धरिजगबाहरडोल।
जिमिमानिगिरि बाहरभये,तबसोभाषुलमोल॥
परमारथ दाया सहित, व्यवहारो सुख देत।
रामचरन रबिजलहरत,बहुरि देतजगहेत ५०
रामचरन पढ़िमधुरकहि, बिन बिबेकहियचोर।
असनकीटआहि बचनरुचि,सारोकोकिलमोर॥
रामचरन जोहृदयबस, प्रघटबचनसँग सोइ।
पवनचलतसोइगंध लहइ,जसपदार्थमेंहोइ ५२
बचनमध्य लखुसुजनसब, कपटसाच हियकेर।
रामचरनतबपवनसँग, गंधनि गंधनिवेर॥५३॥

भनितद्वार परपेषिये रामचरन कबि आस ।
जस्नकोउभोजन करतहै,तसडेकारमें बास ५४॥
जथानाव हरिसंत मे, तथाअविद्या नास ।
रामचरनरबिउदित जसतमतस होतप्रकास ॥
रामचरन दृढ़ भजनकरु, बिन श्रमकर्मसिरान
जिमिसुअन्न निजतृप्तिहित,बाहिनीपाचउआन
मिलइ बचन मनकर्मदृढ़,निजउपासनालीन ।
रामचरन तेहिसंतसँग, रहबसदाछैदीन ५७॥
जहँ उपासना मुख्य है, सोइबिसेषसतसंग ।
रामचरन जिमि पतिव्रता निजपतिलखतउमंग
सास्त्रन्ह मध्य बिशेष सो, जहँ उपासनाहोइ ।
रामचरनजल दुग्धमिलुहंसगहतजिमिसोइ ॥
सुचिसेवा प्रारब्ध मिलि, रामचरनजबपाइ ।
क्षुधा कर्मअरुअसनजिमि,भोजनकरतासिराइ॥

एक जन्मके कर्मफल, भुक्ते जन्म अनेक।
संचितवाकोकहतहै, दुखसुख सहतविवेक६१॥
एक जन्म के कर्म फल, भुक्ते दूजी देह।
सोइप्रारब्ध कहावइ, स्थूल भोगकरिलेह६२॥
जसकिशान करुकर्मसब, तंदुलसँचिदसबर्ष।
पुनिविहनरखिअग्रको, बोवतजबहोइबर्ष॥६३॥
एकजन्म ते जानहि, तीनि जन्मकी बात।
ज्ञानउदयजबहोतहिय, संचितकृपाविलास६४
रामचरन सतगुरबिना, हरिमगलखइनछेम -
जिमिजहाजचलोसिंधुमें, करनधारकेनेम॥६५॥
रामचरन सतगुरुबिना, हरिमगश्रवननचीन्ह।
जिमिबिहँगलखुगगनमग. जलमारगलखुमीन
रामचरनभजुरामपद, त्यागिसकल मनकाम।
जिमिपोखतसिसुमातुपितु, तिमिपोखहिंगेराम॥

चातकमरेउनजलबिनु, अजगरमरेउ नभूख ।
रामचरनप्रभुआसते, हरितरहतगिरिरूख ६८
रामचरनपद छांड़िके, निराकार जो ध्याव ।
रामचरनतजि चन्द्रमा, करतचान्द्रिकाभाव६९
निराकारकहिरूप निज, तजिसरूप रघुबीर ।
रामचरनतजिगंगढिग, तृषितभ्रमतरविनीर ॥
आपुहि देखे आपुमें, हरिहि लखे सब देश ।
रामचरनभजुसर्वतजि, तबहुलसतउपदेश७१
रामचरनअघपूर्व से, रुचइनभल सतसंग ।
भोजनरुचइनसरुजतन, भूखनरुचइनअंग७२
रामचरन तजिरामको, अपरकरे प्रतिपाद ।
यथामिठाईभूतको, उभयभांतिनहिस्वाद ७३॥
सन्तक्रोध अन्तरलखब, रामचरनहित काम ।
मलयमिर्चकरुआइजिमि, शीतलतापरिनाम ॥

रामचरन जियसीखजब, परमातम गुरुहोइ।
आपुहिमे सतसंगजब, रामरूपलखुसोइ ७५॥
ज्ञानजोगकर्मपरभक्ति, राम नाम सुख मूल।
रामचरन बटबीजमें, पेड़पात्रफलफूल ॥७६॥
रामचरन बरतोरतन. बिनुचाहै होइ जाइ
त्योंबिषया पायहुतजे, भेखजाबिरतिलगाइ७७
रामचरन निजमारि के, खातासिंहअरु सन्त।
प्रमारीक कादर भखे, गीधश्रीकोलअनन्त७८॥
रामाबिरह मनमेंजरे, पुनिनबहुरि जग होइ।
रामचरन जिमिभूजिये, बीजउगेनाहिंकोइ ७९
रामचरनसब नखतादिन, मेघनीर सब एक।
चातककहे उपासना स्वातिहितेयकटेक॥८०॥
रामचरनयक रूपताजि, भिन्नउपासक पाइ।
सोइविष्णुनरासिंहभय, लछिमीनिकटनजाइ८१

गुरुउपासना मिलतजो, शास्त्रमिलतपुनिहोइ।
निजआतम निश्चैबहुरि, रामचरन धरुसोइ॥
ताको कछुनाहिलषि परे,जिनरचिलखेउबिशेष।
रामचरन तिमिरामलखि तेहिकछु परइनदेख॥
बोलहिं देखहिं सुनहिंजो, रामचन्द्रताजिध्यान।
रामचरननर मूकसोइ, अन्धबधिरअज्ञान ८४
रामरूप निज रूपका, जाको मन न सँभार।
रामचरन तिहुकालमे सो मनलखब गँवार ८५
चातक लही उपासना, मेघनखत जस एक।
रामचरनसबबादिलखि,स्वातिहुतेएकटेक८६॥
रामचरन गहिसुरति ते, रामरूपामिलि जाइ।
रामचरनजलधारगहि,मीन सैलचढ़िधाइ ८७
रामचरन मीठे लगैं, तबहिंराम निज कीन्ह।
रामचरनतिमिमीनकोबन्सीते गहिलीन्ह ८८॥

रामचरनमन मिलनपट, अमल प्रेमजलनीर।
सतगुरु धोय बिबेक ते तब पहिरै रघुबीर८६
बिरतिज्ञानसतगुरबिना,जिमिबनितबिनुपीव।
रामचरन तिमिरामके, भजनबिनायहजीव९०
रामचरन तिमि दीपघृत, ब्रह्मसुरतिवातीय।
सतगुरमिलेसोगुरुनये, जिमिदीपकतेदीय ९१
रामचरन मन जाइजो बिषय यतन करु लीन।
धुरीपरेरबि कीनजो, रबि नाहि होत मलीन॥
बिनुचाहे मन जाइ जो तोतनदृढ़करि राखु।
जरी जेवरी बधेउ तब, रामचरन दृढ़ भाषु॥
रामचरन सतसंग सो. बैर मान पछिताइ।
दुर्वासागे पांडुगृह फिरे राख मुख लाय॥९४॥
रामचरन जो संतसँग, बैर परे परिहास।
त्रिभुवननृपब्रह्मादपितु, बेगिकीनप्रभुनास ९५

रामचरन निजबैरते, हरिनहि मान उदास ।
संतबैर प्रभुवैरवौ, मुनि भृगुपतिदुर्वास ९६॥
रामचरन सतगुरु बचन. फुर नबीन बैराग ।
बैददेइ भेषज सुभग, बिनसंजमनहिलाग.
गृहकुटुंब हित लोकधन,घनदामिनि दिन
रामचरनअसजानिमन. करहु रामपद
रामचरन स्वारथ हितू. सुहृद मातु तिय
अन्तकाल जबहोत ते, तुरितहोतयमदूत ९९॥
रामचरन तनसुख लिये, बैर मित्रवतकीन ।
अन्तभस्मबिष्टाकृमी कहांप्रयोधो दीन १००॥
रामचरन आश्रम बरन, कर्मनीच अरुऊँच ।
उर्द्धअर्द्ध राहटघटी, फिरे भरेअरु छूच्छ १०१
रामचरन सब तजे बिनु, भजे रामपद मूल ।
ज्ञानकर्म अरुधर्म सबज्यौ सेमर के फूल १०२

रामचरन बैराग बिनुसभे साधना झूठ।
भस्म होमचाउर लिये, जिमि कोउभूसीकूट ॥
अस्फुर समदृष्टांत सत, रामचरन संदेश।
रामरमि बहुबस्तुसुपान करि, बीजभोजन केहेत ॥

रामच

सतगुरमिलांदृष्टांतवोधिका बिबेकलक्षणबरनने
रामच बिबेकसतक समाप्तः

शुभंमस्तु सम्बत् १९५५